International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बिहार के ध्रुवद गायकी–के घराने

डा० रूबी कुमारी
स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य
विभाग,
एल० एन० एम० यु०
दरभंगा

संगीत मानव जीवन को मधुर बनाता है। तभी तो भारतीय आचार्यो ने संगीत को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारो पुरूषायों की प्राप्ति के सर्वोत्तम उपाय के रूप में स्वीकार किया है। (1)

भारत वर्ष के प्रसिद्ध राज्य बिहार की मिटटी पानी में संगीत सम्पदा भरपूर है। यहाँ की संस्कृति पुरातन है। शिल्प हो अथवा कला, धर्म हो अथवा दर्शन, साहित्य हो अथवा संगीत, बिहार सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहा है। वैसे तो संगीत की हर विद्या ध्रुपद, रव्याल, ठुमरी, टप्पा , परवाबज, तबला, इसराज, हारमानियम, शनहाई, सितार, सारंगी इत्यादि का विकास बिहार की सरजमी पर हुआ, लेकिन ध्रुपद के क्षेत्र में बिहार के मौलिक अवदान है। (2)

कहा जाता है कि 15 वी शती ई० के अंतिम और 16वी शती ई०के आरंभिक वर्षों के बीच ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर द्वारा अपने दरवारी संगीतकारों बैजू, बक्शू आदि द्वारा ब्रजभाषा एवं अवधी में ध्रुवपद संगीत की रूपरेखा सुनिश्चित हुई।(3)

ध्रुपद संगीत की देश में जितनी भी परंपराये रही है उनमें बिहार की परंपरा सबसे पुरानी ही नही समृद्ध भी है। ध्रुपद की बानियाँ आज भी बेतिया, डुमरांव घराना, दरभंगा घराना, बड़हिया (लक्खीसराय) घरानो के ध्रुपदियों की प्रस्तुतियों में सुरक्षित है।

बेतिया घराने की– शुरूआत चमारी मल्लिक और कंगाली मल्लिक से मानी जाती है, ये दोनो ही प्रसिद्ध बीनकार ये। तत्पश्चात मुंकुद मल्लिक, जुमराज मल्लिक के अलावा इस परंपरा में दुखी मल्लिक, भरथी मल्लिक, बच्चा मल्लिक, उमा मल्लिक, कुंज बिहारी मल्लिक, पांडे मल्लिक, महाराजा आनंद किशोर, तथा नवल किशोर, फकीर चंद मल्लिक आदि प्रसिद्ध ध्रुपद गायक हुये। आनंद किशोर एवं नवल किशोर के शिष्यों में प्रमुख हुये वख्तावर जी, शिवनारायण जी, जय करण मिश्र, गुरू प्रसाद मिश्र आदि। कहा जाता है कि जयकरण मिश्र को दो हजार ध्रुपद कंठस्थ थे। इनके प्रमुख शिष्यों में बनारस के भोलानाथ पाठक थे। इस घराने की ध्रुपद गायकी की विशेषतायेः–
संक्षिप्त आलाप, बंदिश का गान, संपूर्ण गान में लय मे कोई बदलाव नहीं, बोल बाँट बर्जित, रव्याल की तरह विस्तार वर्जित, रागानुकूल गायन।

बेतियां के शासक महाराजा भी संगीत प्रेमी ही नही अपितु उच्चकोटि के बंदिश कार भी थे। जिनमें महाराजा आनंद किशोर एवं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नवलकिशोर जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। शासक महराजाओं ने घरानों के गायको को राजा श्रय प्रदान की।

इस घराने के गायक गोबरहार एवं खंडार वानी के विशेषज्ञ हुये। इस घराने के गायकों ने अपने गायन में पद्धति और परंपरा का यथोचित निर्वाह किये है। बानियों के गायन की दृष्टि से भी इनकी ध्रुपद गायकी प्रमाणिक है। अनेक घरानों के गायको ने बेतिया घरानों के गायको से ध्रुपद की तालीम हासिल की जिनमें बंगाल के विष्णुपुर घराना मुख्य है।

दरभेगा घरानाः– दरभंगा घराना के मल्लिक ध्रुपदियों की परंपरा कोई दो ढाई सौ वर्षो पुरानी है। इस घराने में ध्रुपद के छितिपाल मल्लिक, रामचतुर मल्लिक, पं० सियाराम तिवारी आदि अत्यंन्त ही प्रभावशाली गायक हुये। कहा जाता है कि इस घराने की शुरूआत राधाकृष्ण एवं कर्त्ताराम नामक दो गायको से हुआ जिन्हे दरभंगा नरेश माधव सिंह ने इनके संगीत से खुश होकर अमता ग्राम की जागीर प्रदान की थी। इसलिये इस घराने को '' अमता घराना'' भी कहा जाता है। इस घराने के अन्य गायकों में महावीर मल्लिक, यदुवीर मल्लिक तथा विदुर मल्लिक आदि भी ध्रुपद के उद्भट गायक हुये।

इस घराने के नायक छितिपाल मल्लिक थे। ये महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह के दरबारी गायक थे। अमता घराने के अधिकतर घ्रुपद गायक यथा राजित राम मल्लिक, रामचतुर मल्लिक आदि सभी इनकी शिष्य परंपरा में आते हैं।(4)

इसके अलावे भी इस घराने में पं० गुरूसेवक मल्लिक, कनक मल्लिक, पकीरचंद मल्लिक कन्हैया मल्लिक, राजाराम मल्लिक आदि गुणी संगीत तकार हुये। इस घराने के ध्रुपदियों के गायन की विशेषता उनके नोमतोम की आलाप चारी में है। ध्रुपद घमार की अदायगी में गमके, बोल बाँट, लयो का हिस्सा, सम–बिषम अतीत अनाघान की तरकीबे ये सब निहायत ही खुबसूरती से इनकी गायकी में परिलक्षित होती है। इस धराने के यशस्वी गायकों में पं० राम चतुर मल्लिक जी का नाम आता है। ये ध्रुपद के खंडार वानी गाते थे। वैसे ये चारो पट की गायकी के लिये प्रसिद्ध थे। इन्हे अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुई यथा ''पद्म श्री'' ''संगीत नाटक अकादमी'' पुरस्कार आदि। इसके अलावा पं० सियाराम तिवारी जी को भी अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुई। इनलोगों ने अमता घराने का नाम राष्ट्र ही नही अन्तर्राष्टीय स्तर पर प्रसिद्ध किया।

इसके अतिरिक्त भी वर्त्तमान में प्र० अभय ना० मल्लिक, रामकुमार मल्लिक, रघुवीर मल्लिक, शंकर मल्लिक, प्रेमकुमार मल्लिक आदि ध्रुपद गायक आज भी इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ा रहे है।

डुमरॉव घरानाः– रोहतास जिला का घनगाई ग्राम कई सदियो से ध्रुपद गायको की जन्मभूमि रहा। यहाँ के संगीत परम्परा के आदि पुरूष पं० ज्ञान दुबे हुये। इसी परम्परा के घनारंग जी श्रेष्ठतम गायक हुये। घनारंग डुमरांव राजदरबार से सम्बद्ध रहे इसलिये इनका घराना डुमरांव घराना कहलाया। इन्होंने ध्रुपद की शिक्षा अपने चाचा पं० माणिकचंद एवं पं० अनुप चंद से प्राप्त की। अनुपचंद संगीत के उच्चकोटि के विद्वान थे। इस परंपरा में बच्चू दुबे भी महान ध्रुपद गायक हुये। आगे पं० सहदेव दुबे एवं पं० रामप्रसाद पाण्डे इस धराने के ध्रुपद गायकी के उद्भट ज्ञाता एवं प्रस्तोता हुये। प्राचीन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परंपरानुकूल साहिल्य और संगीत का अनूठा समन्वय तथा कई आवृतियों के सरगम की बंदिशों का गायन इस घराने के घ्रुपद गायकों की विशेष्ता रही।

बड़हिया घराना– इस घराने की शुरूआत 1790 ई० के आसपास गोपाल मिश्र से मानी जाती है। ये संगीत के प्रबंध के बहुत बड़े ज्ञाता थे। इस घराने के ध्रुपद गायकों में चंडी मिश्र, बैदेही मिश्र, मन्नालाल मिश्र बच्चा मिश्र, चक्रधर मिश्र आदि हुये। जो ध्रुपद के विद्वान थे। वर्त्तामान यें भी इस घराने के गायक अपनी परम्परा को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। इस घराने की सबसे बड़ी विशेषता थी ये लोग बंदिशों की रचना करते थे और उसके बाद उसे स्वरबद्ध करके गाते थे।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बिहार के ध्रुपद धरानों के इन महान संगीतज्ञों के द्वारा ही विश्व फलक पर घ्रुपद के क्षेत्र में बिहार की पहचान है। इन संगीतज्ञों ने राष्ट्र के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस क्षेत्र में बिहार को प्रतिष्ठित एवं गौरवान्ति किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

(1) कुलश्रेष्ठ सुषमा– कालिदास साहित्य एवं पशु पक्षी संगीत पृष्ठ–4
(2) कुमारी, रूबी – बिहार के संगीत घराने, पृष्ठ–192
(3) सिंह गजेन्द्र ना० बिहार की संगीत परम्परा– पृ०–48
(4) वही – पृ०– 58